

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

ग्रंथ नाम

पुस्तक संख्या (२५०)

पुस्तक अर्भाग.

विषय

मराठी काव्य.

(1) ५९६/७ 280
॥ बहुतारि ति ॥ कीवमा श्री काकुलति
॥ १ ॥ न देरवे पंछरी ॥ तुंका चेरण विरे
॥ वरी ॥ २ ॥ आत्प मासीम
॥ ति ॥ हं पु निरले काकुलति ॥ १ ॥
॥ आला दाखवा दाखवा ॥ तुमची
॥ पांउले के रोवा ॥ २ ॥ आलाची
घने लव

(2)

॥ रमा इया मना ॥ नाही नाही ना
॥ रायेणा ॥ ३ ॥ तुका भणें दया ॥
॥ मज कर आधा गीया ॥ गा ॥
॥ ७ ॥ देवा जे रे रे सेतरी ॥ लुसे रे
॥ रणा गत हारी ॥ १ ॥ आता न पालि
॥ जे केले ॥ श्री दल ही के आ पुले ॥

(207)
॥२॥ देवाकुद्धनाहीचीत ॥ परीक्षं
गणवितोभक्त ॥३॥ मजकोणपुसेरका
॥ नामसागतुसेतुका ॥ १० ॥ ५७ ॥ ५८ ॥
॥ गरूडचेपाई ॥ वेवेवेछेवेछाजेई ॥
॥ वेगीआणावातेहारी ॥ मजदी ॥
॥ नातेउद्धरी ॥२॥ पायलक्षुमीचे
॥ हाति ॥ एणुनि येतोकाकुललि ॥

(3)

॥३॥ तुका मणे दोषा ॥ जगे कनारुपी
॥ केशा ॥ गाथा ॥ ध्याव पाव गरुड ॥
॥ ध्वजा ॥ आसना नाथाच्या का
॥ जा ॥ १ ॥ बहुल जग को का सा विस ॥
॥ पाहे प्रवला ली वास ॥ २ ॥ पाहे पा
॥ हे सा मारुगी ॥ कोण येतो माझे ॥

हं

(३१)
॥ लागी ॥ ३ ॥ आसो निया जैसा ॥ ॥
॥ तुज सारी खा को वसा ॥ ४ ॥ तुकं ॥
॥ ठेचाली ॥ चालुन को धावघा
॥ ली ॥ ५ ॥ ५ ॥ तुझे मांडीवरी
॥ ३ ॥ ॥ ठेवैली विठंबाई ॥ १ ॥
॥ मारी आघवातारी ॥ सीरतुसे

॥ हाति सुदि ॥ २ ॥ दांति धरुनिया तृणा ॥
॥ तुका लने आले शरण ॥ ७ ॥ का
॥ यतु सिंधोरि ॥ वर्ण मिपा मर ॥ हो
॥ सिदया करहरा सिंधु ॥ ३ ॥ तुज
॥ छे सिदया ॥ नाह बा निका सि ॥
॥ छे करु सि के रि न वळ यक ॥ २ ॥
॥ करुक्षत्र भुमि ॥ वरि पक्षिया
॥ ले ॥ त्रुणा मा जी के ले को टिया

॥ नि ॥ ३ ॥ ^(4A) आ क स्मा त ते थे र ण र खा
॥ ब रो वि ल्हा ॥ ४ ॥ यु ध या चाने मि ल्हा
॥ ठा व ते थे ॥ ४ ॥ कौ र व पा उ व ॥
॥ द ल भार दे नि ॥ ५ ॥ जु झा व या
॥ र णी आ लै ते थ ॥ ५ ॥ हां ति
॥ घो डेर थ ॥ ६ ॥ धा व ति ल पा
॥ शान हो ति ल स त चु णी ॥ ६ ॥
॥ त या का वि प क्षि ॥ ७ ॥ जु ज आ

॥ टविति ॥ ध्यां वगा श्रीपती ॥ लवला
 ॥ हे ॥ ७ ॥ ऐसी या सैकडी ॥ वांचु कव
 ॥ प्यापरी ॥ ध्या वगा श्रीहारी ॥ लवला
 ॥ हे ॥ ८ ॥ नकरी ॥ पोती ॥ केसी जा
 ॥ उआता ॥ पाव जगन्नाथा ॥ लवका
 ॥ री ॥ ९ ॥ यका जे गेची या ॥ कंटीच
 ॥ ठाहोती ॥ पडली आंवची ति ॥ तया

॥ वंरी ॥ १० ॥ आठरादिवसलेये ॥ मास
॥ युध्यजाले ॥ वारेनलागले ॥ उष्ण
॥ तथा ॥ ११ ॥ जुंजजाल्यावरी ॥ दाविले
॥ जार्जुनां ॥ तुः ॥ वारायेणां ॥ पक्षी
॥ यासी ॥ १२ ॥ पाहें म्याज्मापुल्यां ॥ न
॥ त्मासीरक्षीले ॥ रंजीवां नविले ॥

(6)
॥ कैशापरी ॥ १३ ॥ ऐसी तुज माया ॥ आ
॥ पुल्हा भलाची ॥ माउली आमुची ॥
॥ लुका छंणे ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥
॥ आ ज्या मैळ आंत ॥ परणासी आला ॥
॥ लोवरी स्मरला ॥ नाही तुला ॥ १८ ॥ आ
॥ ण जाता वेळे ॥ लगे नारायेण ॥ द्यासा
॥ दी विमान ॥ पाव विलो ॥ १९ ॥ ऐसा तूं
॥ दळ पाकु ॥ होसी जे गन्नाया ॥ २० ॥ त्रैलो

(64)
॥ वपसमर्था ॥ सोयरीया ॥ ३ ॥ तुकंल
॥ णेतुज ॥ वर्णीतिपुणणे ॥ लेसीदया
॥ घन ॥ छपासी ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥
॥ छपावंता ॥ दुने ॥ नाति तुंसापाठी
॥ लाडे बोले ॥ ६ ॥ सुखमति ॥ ७ ॥
॥ चेनुनिजा तुके ॥ लागसीलपाठी
॥ लाविसीलहेठी ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

र

(७)

॥ सरवसीलपारव ॥ घालो निपारवर ॥ उ
॥ दासीनपर ॥ दमावुतु ॥ ३ ॥ तुकात्रं
॥ णे आह्लाः कारणे गोविदा ॥ वागविसीग
॥ दा ॥ सुदेशेण ॥ ४ ॥ ५ ॥ घालिलभीपा
॥ पी ॥ शंरणआतोतुज ॥ राखीमासी
॥ लाजा ॥ पांडुरंगा ॥ १ ॥ तारीयेलेभत्त
॥ नकळे तुसायात ॥ धोरभीपलिल

॥ पांडुरंगा ॥ २ ॥ द्वौ पदी बहिनि ॥ वैरी गा
॥ जीयेली ॥ तेहा सो उवेली ॥ पांडुरंगा
॥ ३ ॥ सुदामा प्राण ॥ हरी द्वेपीडी
॥ ला ॥ व्यापण ॥ केला ॥ पांडुरंगा
॥ ४ ॥ प्रलंदा देकारणे ॥ स्तंबी आ
॥ बतार ॥ माझा का विसर ॥ पांडुरं
॥ गा ॥ था ॥ तु का हंणे तुज ॥ शोरण

(8)

॥ चक्याभावे ॥ पापनिर्दोषको ॥ पांडुरं
॥ गंगा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ पापीक्षुणुतरी ॥ आ
॥ वितोपाये ॥ दोत्रोबलीकाये ॥ त
॥ याहुनि ॥ ॥ ऐतव्यविचाराच्या ॥ घा
॥ लोनीकोडणी ॥ कायचक्रपाणी ॥
॥ निजलेति ॥ ३ ॥ एकवेळाजाण
॥ पुत्राच्याउद्देशे ॥ चेतल्याचेंकैवे

॥ पापनेले ॥ ३ ॥ तुकाष्टणे आहे
 ॥ वैकुंठनायका ॥ चिंताकासेव
 ॥ का ॥ तुमची पा ॥ ११ ॥ ५ ॥
 ॥ काय ते साम ॥ चले या काळे ॥
 ॥ काय जाली व ॥ रांसी ही व ॥ १ ॥
 ॥ मासीया संचीले ॥ आणीला सीहा
 ॥ १ ॥ जाते तुझा वरी ॥ वरी रहे ॥

(९)

॥ २॥ कोरेगमाविली ॥ सुदर्शणग
॥ ३॥ खानेनेमोविदा ॥ लाजतसा ॥
॥ ४॥ लुकापुननेकाये ॥ प्रीदापहे
॥ ५॥ काम ॥ सांडावेला नामा ॥ दीनाना
॥ ६॥ य ॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ बोलनाहीलुस्या
॥ ११॥ द ॥ चुसपणासी ॥ आसीआवि

(9A)

॥ त्वत्सी ॥ सर्वभावे ॥ १॥ करसती
॥ सौंग ॥ दाखउयाजना ॥ आंतरी
॥ आवना ॥ वेगळीच ॥ २॥ तुकाछेण
॥ देवा ॥ तुकायसीसी ॥ कर्मदुस्त
॥ रची ॥ आमु ॥ ३॥ १३॥ १४॥ १५॥
॥ त्वष्टुखेचीतुष्टी ॥ सौंगाविजीसेवा
॥ ऐसेमासेदेवा ॥ मनोगत ॥ १॥

॥ नवो आसी काही ॥ आपुल्या उदारे ॥
॥ चीत वित घरे ॥ जीवावरी ॥ ३ ॥ बोल
॥ परस्ये ॥ वाढ्यावे सुरव ॥ पाहावे श्री
॥ मुख ॥ डोळे भर ॥ लुकावणे स
॥ य ॥ बोलतो वचन ॥ करोणी पंर
॥ ण ॥ साक्षी तुझे ॥ ७ ॥ १४ ॥ ५७ ॥ ५७ ॥
॥ कीर्ति लुज पारी ॥ देउपरी हार ॥

(10A)

॥ जाणसि आंतर ॥ पांडुरंगा ॥ १॥ आ
॥ तामासे हाति ॥ देई मासे हीत ॥ क
॥ री मासे चीत ॥ समाधान ॥ २॥ हाग
॥ आला जरी ॥ काय नयमान ॥ बाजं
॥ प्राय विन ॥ कोण वारवी ॥ ३॥ तुका
॥ ह्मणे देवा ॥ नराहे लोकीक ॥ प्रागे



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com